Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 5.69
ISSN No. 2456-1665

सूर्यबाला के कथा साहित्य का अनुशीलन

डॉ. बिक्कड ए. एस.
हिन्दी विभागाध्यक्ष
राष्ट्रमाता इंदिरा गांधी कला, वाणिज्य एवं
विज्ञान महाविद्यालय, जालना

सूर्यबाला हिन्दी साहित्य की एक प्रसिद्ध लेखिका है। कथा साहित्य में उनका बड़ा योगदान है। उनके कथा साहित्य में सामाजिक, आर्थिक, मार्मिक चित्रण मिलता है। उसी तरह से उनके कहानी साहित्य में निम्नवर्गीय पात्र मिलते हैं।

समकालीन महिला साहित्यकारों में सूर्यबाला का अपना स्थान है। उन्होंने एक कार्यक्रम में भारत के स्वतंत्रता के शाम का वर्णन किया था। उनकी आयु बहूत कम थी। उन्होंने उस समारोह में दर्शकों को खूश कर दिया था।

बिगडती राजनीतिक अस्थिरता के कारण समाज की आर्थिक स्थिति गिर गई। उन्होंने औद्योगिक विकास, पूँजीवाद नगरीय व्यवस्था आदिपर बल दिया है। देश में बड़ते महंगाई ने बेरोजगारी के कारण देश के नवयुवक बुरे मार्ग को अपनाने लगे। सामान्य व्यक्ति का जीवन अपने में व्यस्त हो गया। इस संदर्भ में माधव सोनटक्के लिखते है - "अर्थ का अभाव और निरंतर बढ़ती जरुरतें दोनों में मेल न होने के कारण व्यक्ति अतिरिक्त धन प्राप्ति के लिए बुरे मार्ग भी बेहिचक अपनाता जा रहा था। सरकारी कार्यालयों में व्याप्त भ्रष्टाचार, घूसखोरी, राजनीति के क्षेत्र में अनाचारा, वाणिज्य क्षेत्र में व्याप्त सट्टेबाजी एक अर्थ केंद्र जीवन दृष्टि के ही विकृत पहलू है। सूर्यबाला की कहानी जितनी आधूनिक परिवेश का साक्षात्कार कराती है उतनी ही उसमें भारतीय जडों का भी महत्त्व मिलता है।"[1]

उनके लेखन में हम जिस मध्यमवर्गीय को देखते हैं वह भूमिका बचपन से मिलती है। उसकी प्रोत्साहन की माँ है। वह बचपन में बेहद उदास थी। उनकी पहली रचना 9 वर्षों की आयु में बाँसूरी शीर्षक कविता के रुप में लिखी थी। उनका बचपन का साहित्य 'आज' के साहित्य परिषदों में प्रकाशित हुआ है। कविता और कहानियाँ लिखी है। स्कूल में कई प्रतिस्पर्धा

में भाग लिया है। विवाह होने के बाद उनके लेखन में खंड आया। उनकी पहली कहानी 'जीजी' सारिका में अक्तूबर के 72 अंको में प्रकाशित हुआ। सूर्यबालाजी ने पारिवारिक जिम्मेदारियाँ और समस्याओं तथा स्त्री-पुरुष के यौन संबंधों से आगे उठकर जो महिला कथाकार व्यापक लेखन धर्म को निभाती है। उन्होंने नारी विमर्श के प्रवक्ता के रुप में हमारे सामने है। उनके उपर भारतीय संस्कार का प्रभाव रहा। उनकी अधिक नारी पात्र संस्कारों का विद्रोह नहीं करती। वे पात्र संस्कारों को साथ लेकर आगे बढ़ते हैं। उनका हर नारी पात्र समय के साथ चलता है। वह हमेशा अपने लेखन के प्रति गंभीर थी। सूर्यबाला जी जिस संस्कारों से उपजी है वही संस्कार साहित्य में मिलते हैं। उनकी मानवीय मूल्यों में गहरी आस्था थी। उनका साहित्य और समाज से बहुत बड़ा नाता है। समाज, परिवार, मानवीय संबंध, अपने सपनों को पूरा करने की उत्कट, सरों की तकलीफों को समझने, यह विशेषताएँ उनकी कथा साहित्य में सहजता से समाहित है। इस पर उनकी कटाक्ष करना नहीं भूलती, जो मानव जीवन को असहज और असंतुलित बनाते हैं।

'गौरा गुणवंती' कहानी संग्रह में वर्णित पात्र पर उन्होंने कहा है - "सूर्यबाला आदमी की सीप में आत्मीयता के मोती की तलाश करती हैं। वे स्वंय खुद से पूछती है संस्कृतियों के टकराव और संकर्णताओं के बीच कबतक बचा रह पाएगा तुम्हारे शब्दों का अस्तित्व।"[2]

उनकी कहानियों में आधुनिक युग की बढ़ती विषमता और दूरियाँ जो संबंधों में दिखाई देती है तो दूसरी तरफ वह अपने पात्रों के माध्यम से व्यक्ति के स्वभाव को भी व्यक्त करती है। 'मानुष गंध' कहानी संग्रह के पराए देश में रहनेवाले नौजवानों की कहानी है। पराए देश हमेशा पराए ही रहता है।

उन्होंने अपने जीवन में सूखों का संघर्ष देखा है। विश्वनाथ सचदेव के शब्दों में लिखा है - "सूर्यबाला की रचनाओं के पात्र सर एक संदेश देते हैं। सहज मानवीय कमजोरियों से बचना असंभव है, उनके बावजूद सही व्यक्ति बनना संभव है।"[3]

सूर्यबाला का लेखन आज की नारी के इर्द-गिर्द की रचा गया है। उनकी कथा की जो नायिका है उसकी विशेषत: वह चाहे किसी भी वर्ग की हो, पढ़ी लिखी, अनपढ़, शहरी या गँवार, गृहणी या नौकरी पेशा किसी भी परिस्थिति को उखाड़ पछाड़ करना नहीं जानती।

सूर्यबालाजी ने नारी अधिक कथा लिखी है। ऐसा कहना उनपर अन्याय होगा। उनके साहित्य में मान के अनेक रंग बिखरे हुए है। उनके अधिकतर उपन्यासों में यह देखते हैं। आज नगर महानगर का जीवन बहुत तेज और संघर्षमय है यह गति ही जीवन की गती है। गति रूक गयी तो जीवन की गति रूक गयी। महानगरीय जीवन अत्यंत तनावग्रस्त, अकेलेपन, खुदगर्जी, आत्मीयता, व्यस्तता आदि से बुना है। महानगरीय जीवन में व्यक्ति को अपने से मिलने के लिए समय नहीं है। मानव की संवेदना खत्म होती जा रही है। लेखिकाने 'अग्निपंखी' उपन्यास में गांव और नगरीय जीवन का चित्रण बखूबी से किया है। जयशंकर की माँ के रुप में एक ग्रामीण नारी का ऐसा मर्मस्पर्शी वर्णन किया है। जिन्होंने आधी जिंदगी गांव के खुले में जी है। सूर्यबाला का दीक्षांत उपन्यास 1992 में प्रकाशित हुआ। इसमें वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का चित्रण किया गया है। शिक्षा व्यवस्था में फैले भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी का चित्रण उन्होंने किया। आज कॉलेज, स्कूल विद्या के मंदिर माने जाते थे लेकिन आज यहाँ भ्रष्टाचार ही बढ़ते जा रहे है। उन्होंने व्यंग्य साहित्य तथा कहानियों पर भी लिखा है।

सृष्टि का नियम परिवर्तन है। उपनिषद काल में नारियों का स्थान अति उत्तम था। देश परिवर्तन के साथ नारी की दिशा और दशा परिवर्तित होने लगी। समाज में उन्होंने जीता जागते मनुष्य का अपितु एक रुप में देखा है। साहित्य समाज का दर्पण है साहित्य और समाज एक दूसरों के पूरक है। आधुनिक काल में महिलाओं का स्थान बदल गया है। आज के समाज में स्त्री ही स्त्री के बारे में लिखने लगी है। उन्होंने केवल महिला पर ही नही लिखा, तो दुनिया के सुक्ष्म व्यापक विषयोंपर लिखा है। महिला लेखिका केवल महिलाओं पर ही नहीं लिखती। मानवीय मूल्यों का महत्व जितना महिला कथाकारों ने दिया उसका नाम सूर्यबाला है।

संदर्भ सूची :

1. समकालीन परिवेश प्रासंगिक रचना संदर्भ, डॉ. माधव सोनटक्के, पृष्ठ. 11
2. सूर्यबाला के सृजन संसार, पृष्ठ. 17
3. सूर्यबाला के सृजन संसार, पृष्ठ. 232